Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2024 International Council for Education Research and Training
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

भारत विश्व की उभरती हुई महाशक्ति

कुमार, राजेन्द्र

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय भट्टू कलां, फतेहाबाद

(हरियाणा)

सारांश (Abstract)

वर्तमान समय में भारत की गणना विश्व की उभरती हुई महाशक्तियों में की जाती है। भारत के आर्थिक विकास की यात्रा में मुख्य रूप से दो पड़ाव देखे जा सकते है। पहला देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति 15 अगस्त,1947 से लेकर सोवियत संघ के विघटन (1991) तक और दूसरा 1991 से लेकर वर्तमान समय तक माना जा सकता है। भारत में शुरू की गई उदारीकरण की शुरूवात एक साहसिक फैसला था जो कि तत्कालीन परिस्थितियों के मद्देनजर लिया गया था। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन की सरकार में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने वर्ष 1998 में दूसरी बार परमाणु परीक्षण (पोखरण-2) करके एक बार पुनः समूचे विश्व को भारत की सैनिक क्षमताओं से अवगत कराया। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन की सरकार के दौरान प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने बड़ी सूझबूझ और चतुराई के साथ अमेरिका, रूस, चीन, यूरोपीय संघ आसियान इत्यादि के साथ भारत के संबंधों को नयी दिशा दी। भारत का अमेरिका के साथ असैनिक परमाणु समझौता (123) एक ऐतिहासिक निर्णय माना जा सकता है। वर्ष 2014 में केन्द्र में स्पष्ट बहुमत के साथ श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में (भाजपा-एन.डी.ए.) सरकार का गठन हुआ। वर्ष 2019 में लोकसभा चुनाव के बाद पुनः श्री नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने। पिछले एक दशक में भारत ने अनेक क्षेत्रों में अप्रत्याशित प्रगति की है। वर्तमान में भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश हैं। कोविड-19 महामारी से विश्व के

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

सभी देशों की अर्थव्यवस्थाएं नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई। भारत के उभरती हुई महाशक्ति के दृष्टिकोण से बड़ा आकार, आर्थिक शक्ति, सैन्य शक्ति , मानव पूंजी और रणनीतिक लाभ को मजबूत पक्ष माना जा सकता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। वर्तमान में दो विरोधी खेम्मों में बंटी दुनियां में भारत शान्ति का सेतुबन्ध बन सकता है। भारत ने कोविड-19 महामारी में वैक्सीन कूटनीति के जरिये मानव सेवा की मिशाल पेश कर दुनियां के देशों का विश्वास जीता है। भारत आर्थिक, सैन्य, खाद्य निर्भरता, अन्तरिक्ष, पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि के क्षेत्र में निरंतर प्रगति और आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ा है। मेक-इन-इण्डिया और भारत आत्मनिर्भर अभियान के सकारात्मक परिणाम दिखाई पड़ रहे है। विदेशी मुद्रा भण्डार में निरन्तर वृद्धि हुई है।

भारत में अमेरिका, चीन और रूस को बड़ा बाजार दिख रहा है, इसलिए ये राष्ट्र भारत के साथ बेहतर संबंध चाहते है। विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति (वर्ष 2047) के मार्ग में आन्तरिक और बाहरी चुनौतियां भी कम नहीं है। वर्तमान समय में भारत अपने राष्ट्रीय हितों को प्रथामिकता में रखते हुए अमेरिका और रूस दोनों के साथ संबंधों को संतुलित कर रहा है। डोकलाम विवाद (2017) और गलवान घाटी झड़प (2020) के समय भारत ने चीन को कड़ा संदेश दिया। भारत का विश्व शक्ति के रूप में उभरना मानवीय मूल्यों, शान्ति, लोकतन्त्र, न्याय, समता मूलक विकास और मानवता की रक्षार्थ कल्याणकारी सिद्ध होगा।

कुंजीभूत शब्दः- उदारीकरण, पोखरण-2, परमाणु करार (123), कोविड-19, मेक-इन-इण्डिया, भारत आत्मनिर्भर अभियान।

1. परिचय (Introduction) भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जो विदेश नीति अपनाई उसमें गुटनिरपेक्षता की नीति, साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद का विरोध, नस्लीय भेदभाव का

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

विरोध, साधनों की पवित्रता की नीति, पंचशील, संयुक्त राष्ट्र संघ तथा विश्व शान्ति के लिए समर्थन, अफ्रीकी-एशियाई एकता, राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता की नीति, मित्रतापूर्ण सम्बन्धो पर जोर, निशस्त्रीकरण का समर्थन और क्षेत्रीय सहयोग पर जोर देने को आधार रूप में स्वीकार किया गया। द्वि-धुरवीय विश्व व्यवस्था में भारत ने दोनों महाशक्तियों संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्धां की स्थापना पर जोर दिया। भारत पर चीन के आक्रमण (1962) के बाद भारत की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचा। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध (1965, 1971) में भारत की निर्णायक विजय से विश्व में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी। भारत ने वर्ष 1974 में अपना पहला परमाणु परीक्षण कर महाशक्तियों को अपनी सैन्य क्षमता से अवगत करा दिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर सोवियत संघ के विघटन (1991) तक द्वि-धुरवीय विश्व व्यवस्था और अपनी सीमित क्षमताओं के मद्देनजर नीति अपनानी पड़ी। भारत सोवियत मैत्री संधि के मद्देनजर दोनों देशों के प्रगाढ़ सम्बन्धों के कारण अमेरिका ने अपने हितों को साधने के लिए पाकिस्तान की भरपूर आर्थिक और सैनिक सहायता देकर भारत की परेशानियों को बढ़ाने का कार्य किया। इस दौर में भारत की विदेशों पर आर्थिक, सैन्य और खाद्य निर्भरता बहुत ज्यादा थी। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत को बड़े आर्थिक संकट से गुजरना पड़ा। साथ ही भारत के लिए सैन्य आपूर्ति की मांग की चुनौती खड़ी हो गयी।

भारत ने परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को भांपते हुए अपनी विदेश नीति के मूल सिद्धान्तों को बनाये रखते हुए स्थायित्व एवं निरन्तरता के साथ आवश्यक कदम उठाये। तत्कालीन प्रधानमन्त्री पी.वी. नरसिंह राव की सरकार द्वारा वैश्वीकरण, उदारीकरण, भूमण्डलीकरण और निजीकरण की दिशा में कदम बढ़ायें। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा में वृद्धि की गई। भारत ने आर्थिक क्षेत्र में

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए विश्व व्यापार संगठन और आसियान जैसे संगठनों के साथ भागीदारी बढ़ाते हुए आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया को तेज किया।[1] श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में 1998 में लोकसभा के 12 वें आम चुनाव के बाद भाजपा एन.डी.ए. सरकार का गठन हुआ। भारत द्वारा दूसरी बार पोखरण में परमाणु परीक्षण किया गया। इसके चलते भारत को कई देशों के आर्थिक प्रतिबन्धो का सामना करना पड़ा। 1999 में भारत पर पाकिस्तान ने कारगिल में युद्ध थोपकर सीधे तौर पर भारत की सम्प्रभुता को चुनौती दे डाली। घुसपैठियों को बाहर खदेड़ने के लिए भारतीय सेना को ऑपरेशन विजय चलाना पड़ा। वाजपेयी सरकार के कार्यकाल में भारत द्वारा पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए बस डिप्लोमेसी, रेलवे डिप्लोमेसी और क्रिकेट डिप्लोमेसी का सहारा लिया गया। भारत में 14 वीं व 15 वीं लोकसभा के चुनावों के बाद केन्द्र में संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन सरकार का गठन हुआ। मिलीजुली सरकार में डॉ. मनमोहन सिंह ने भारत के प्रधानमन्त्री के रूप में बड़ी सुझबूझ और दूरदर्शिता के साथ देश की अर्थव्यवस्था को नयी दिशा प्रदान की। अमेरिका, चीन और रूस के साथ भारत के सम्बन्धां को संतुलित रूप से साधने का भरस्क प्रयास किया। भारत के अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु समझौता (2007) सम्पन्न होने से सम्बन्धां में सुधार आया। भारत के रूस के साथ सम्बन्ध निरन्तर मजबूत बने रहे। चीन के साथ राजनीतिक गतिरोध के बावजूद व्यापार में तेजी से वृद्धि हुई। वर्ष 2014 व 2019 के लोकसभा चुनावों के बाद भारत में केन्द्र में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्पष्ट बहुमत के साथ भाजपा-एन.डी.ए. सरकार का गठन हुआ। भारत प्रथम नीति को केन्द्रित कर भारत की विदेश नीति निर्धारित की गई। भारत ने पडोसी देशों के साथ सम्बन्धां को घनिष्ठ बनाने पर जोर दिया। 'ओथ डिप्लोमेसी इसका उदाहरण है। आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेन्स की नीति अपनायी गई। सर्जिकल

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

स्ट्राईक 'एयर स्ट्राईक' इसके उदाहरण है। आर्थिक क्षेत्र में सुधार और भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए 'नोटबंदी' और जी.एस.टी. को बड़ा कदम माना जा सकता हैं। आज डिजीटल भुगतान में कई गुणा बढ़ोतरी हो चुकी है। वर्तमान में भारत विश्व में पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश हैं। कोरोना महामारी के समय भारत ने विश्व के देशों की दवाएं और वैक्सीन की आपूर्ति कर कोरोना की रोकथाम में सहायता कर मानव सेवा का अनूठा उदाहरण पेश कर लोगों का दिल जीत लिया। वर्तमान में भारत की गणना विश्व की उभरती हुई महाशक्तियों मे होती है। एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में भारत अपने आकार, आर्थिक क्षमता, सैन्य शक्ति, मानव पूंजी, सबसे बड़ा लोकतन्त्र, रणनीतिक लाभ, सूचना-तकनीकी व सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में दक्षता, ऊर्जा के क्षेत्र मे आत्मनिर्भरता की ओर, अन्तरिक्ष के क्षेत्र में उपलब्धियां, भारत का विशाल बाजार और प्रवासी भारतीय क्षमता के दृष्टिकोण से इसका दावा मजबूत है। भारत की आजादी के 100 वर्ष अर्थात् वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित है। इस लक्ष्य की समयानुकूल प्राप्ति के लिए आर्थिक विकास की दर की निरन्तरता को बनाये रखना जरूरी होगा। भारत के महाशक्ति बनने के मार्ग में कई चुनौतियां भी विद्यमान है। इसमें भ्रष्टाचार, गरीबी, सम्प्रदायवाद, जातिवाद और धार्मिक गतिरोध, विभिन्न मांगो के लिए आन्दोलन, आर्थिक असमानता और अलगवावादी प्रवृतियां जैसी समस्याओं से पार पाना होगा। भारत के सभी क्षेत्रों और राज्यो में विकास की स्थिति एक समान नही हैं। भारत को अपनी सेना को तेजी से तकनीकी से लैस कर आधुनिकीकरण करना होगा।

भारत की अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के मद्देनजर कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस को लेकर बहुत ज्यादा निर्भरता हैं। भारत को तेजी के साथ इलेक्ट्रिक वाहन और ग्रीन ऊर्जा को बढ़ावा देना होगा। भारत की युवा शक्ति की

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

क्षमताओं के अधिकतम दोहन के लिए हस्त-कौशल और तकनीकी से युक्त करना होगा।

2. भारत की उभरती हुई वैश्विक महाशक्ति के निर्धारिक तत्व/कारक-

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय शक्ति ही उसकी विदेश नीति का केन्द्र बिन्दु होती हैं। राष्ट्रीय शक्ति को सामर्थ्य के रूप देख सकते है। हार्टमैन के अनुसार ''राष्ट्रीय शक्ति में यह बोध होता है कि अमुक राष्ट्र कितना शक्तिशाली या निर्बल है या अपने राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति करने की दृष्टि से उसमें कितनी क्षमता है।[2] जब हम एक शक्तिशाली राष्ट्र की कल्पना करते है तो हमारे सम्मुख एक विशाल आकार, पर्याप्त जनसंख्या, धन सम्पदा, प्राकृतिक संसाधन, औद्योगिक क्षमता, सैन्य क्षमता एवं आधुनिक शस्त्रों से लैस बड़ी सेना, तकनीकी क्षमता, विचाराधारा, राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय मनोबल, नेतृत्व क्षमता, कूटनीति, शासन पद्धति और आर्थिक क्षमता ये सभी सामूहिक रूप से किसी राष्ट्र को शक्तिशाली बनने के लिए अहम माने जा सकते हैं। इन सभी तत्वों का राष्ट्रीय हितों की पूर्ति की दृष्टि से बेहतर उपयोग जरूरी हैं।

2.1 भूगोलः- किसी भी देश के महाशक्ति बनने की दृष्टि से भूगोल अहम तत्व है। वैश्विक दृष्टि से भूगोल का प्रभाव सर्वविदित है। किसी राष्ट्र के लिए उसके क्षेत्रफल, जलवायु, स्थालाकृति और अवस्थिति का शक्ति के रूप में उभरने में बड़ा योगदान रहता हैं। बड़े क्षेत्रफल का अभिप्राय कृषि योग्य भूमि की पर्याप्तता, कच्चे माल की प्रचुरता एवं विविधता और अधिक जनसंख्या पालन की क्षमता से युक्त क्षेत्र का होना हैं। समशीतोष्ण जलवायु को ज्यादा उपयुक्त माना गया। इसमें सालभर कार्य करने के अनुकूल दशाये बनी रहती है। वर्तमान में तकनीक और वैज्ञानिक आविष्कारों ने जलवायु को बदलना सम्भव बना दिया है। समय के साथ स्थलाकृति का महत्व कम हुआ हैं। वैज्ञानिक और प्राविधिक आविष्कारों ने भूगोल का महत्व घटा दिया हैं। फिर भी किसी राष्ट्र के शक्ति के रूप में उभरने मे भूगोल का महत्त्व बना हुआ है। किसी राष्ट्र का

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

सामर्थ्य, पारस्परिक निर्भरता और संघर्ष में भूगोल का प्रभाव सर्वाविदित है।[3]

2.2 प्राकृतिक सम्पदा-

प्रत्येक देश के लिए राष्ट्रीय शक्ति के रूप में उभरने के लिए प्राकृतिक सम्पदा की उपलब्धता आवश्यक है। केवल प्राकृतिक सम्पदा का होना ही पर्याप्त नही माना जा सकता है। इसके साथ-साथ पूंजी, श्रम, तकनीकी ज्ञान और सामाजिक मूल्यों का होना भी जरूरी है।[4] प्राकृतिक संसाधन किसी भी राष्ट्र की पूंजी और प्रकृति द्वारा प्रदत्त उपहार है। इसमें खाद्य सामग्री और कच्चा माल शामिल है। किसी भी राष्ट्र के लिए भौतिक साधनों की प्रचुरता एंव विविधता का महत्त्व पूर्व की भांति राष्ट्रीय निर्णय की मजबूती का एक महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

2.3 जनसंख्याः- इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि राष्ट्र के शक्ति के रूप में उभरने में पर्याप्त जनसंख्या का होना अत्यन्त आवश्यक है। अमेरका, चीन और रूस इसके उदाहरण है। भारत भी आबादी में विश्व का सबसे बड़ा देश हैं। भारत अपनी आबादी को कोशल से युक्त कर देश के आर्थिक विकास को नई दिशा दे सकता है। हांलाकि भारत पर ज्यादा जनसंख्या का दबाव अनेक कारणों (रोजगार, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य) से रहा है। भारत के पास विश्व में सबसे ज्यादा युवा आबादी (60-65 फीसदी) हैं जो एक बड़ी मानव पूंजी के रूप में हैं। चीन और जापान में बुढ़े लोगों की आबादी तेजी के साथ बढ़ रही है। जनसंख्या का महत्त्व गुणात्मक दृष्टि से हैं न केवल संख्यात्मक दृष्टि से। जनसंख्या में युवा आबादी का सीधा सम्बन्ध आर्थिक विकास से जुड़ा हुआ हैं।

2.4 तकनीकी क्षमताः- तकनीकी क्षमता राष्ट्र की भौतिक समृद्धि में सहायक होती हैं। किसी राष्ट्र के लिए कृषि, चिकित्सा, उद्योग, संचार, शिक्षा, शासन, अर्थव्यवस्था और युद्ध के क्षेत्र में तकनीकी का महत्त्व सर्व विदित है। तकनीकी क्षमता के बल पर अमेरिका की गणना विश्व की महाशक्तियों में होती है। तकनीक सैनिक,

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

औद्योगिक और संचार तकनीकी के रूप में देखी जा सकती है। तकनीकी क्षमता के कारण अमेरिका, जापान, जर्मनी, रूस और इजरायल जैसे देशों की गणना उन्नत देशों में की जाती है। अणु शक्ति ने विश्व के छोटे राष्ट्रों को सैनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण देशों की श्रेणी में ला खड़ा किया है। भारत में इलेक्ट्रोनिक उपकरणों तथा मोबाइल उपभोक्ताओं की संख्या काफी अधिक है। हाल ही में ब्रिटिश व्यावसायिक सेवा प्रदाता कम्पनी डेलॉयट द्वारा जारी 2023 टीएमसी रिपोर्ट के अनुसार भारतीय सेमी कडंक्टर बाजार के वर्ष 2026 तक 55 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की संभावना है।[5]

2.5 विचारधाराः- राष्ट्रीय शक्ति के लिए मानवीय तत्व के रूप में विचारधारा का अपना महत्त्व हैं। विचारधारा का महत्त्व लोगों में मनोबल उत्पन्न करने की दृष्टि से भी है। विचारधारा ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीत युद्ध के दौर में पूंजीवादी और साम्यवादी खेम्मों में बांट दिया था। भारत की विदेश नीति पर अशोक और कौटिल्य दोनों की विचारधारा से प्रभावित है। प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू के समय भारत की शान्ति-पूर्ण-सहअस्तित्त्व का प्रभाव ज्यादा दिखाई पड़ता है। परन्तु प्रधानमन्त्री श्रीमति इन्दिरा गांधी के कार्यकाल में यथार्थवाद का प्रभाव ज्यादा देखा जा सकता हैं। भारत की नीति में वैश्विक कल्याण सर्वोपरि स्थान रखता हैं। भारत मानवीय मूल्यों की रक्षार्थ सदैव तत्पर रहा है। वैश्विक आतंकवाद को लेकर भारत की नीति में स्पष्टता है। और वह उसका पुरजोर विरोध करता है। भारत सतत् विकास और समावेशी विकास का पक्षधर हैं। पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए साझे तथा अलग-अलग उत्तरदायित्व के सिद्धान्त पर भारत बल देता रहा हैं।[6]

2.6 सैन्य क्षमता- किसी भी राष्ट्र के राष्ट्रीय हितों की पूर्ति में सैन्य क्षमता को एक महत्त्वपूर्ण कारक माना जा सकता हैं। भारत एक परमाणु शक्ति सम्पन्न देश है। चीन और पाकिस्तान के साथ भारत के संघर्ष के मद्देनजर सैन्य क्षमता

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

में निरन्तर वृद्धि बनाये रखनी होगी। भारत की सैन्य शक्ति की गणना विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में की जाती है। भारत के द्वारा अपनी भूमि, समुद्री सीमाओं, वायु क्षेत्र, साइबर सुरक्षा अन्तरिक्ष, सूचना, अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय सुरक्षा के लिए प्रभावी तैयारी की आवश्यकता हैं। सीमा विवाद को लेकर पड़ोसी राष्ट्रों से सम्बन्धो पर प्रभाव पड़ा है। सीमा-पार से चीन और पाकिस्तान जैसे राष्ट्र संगठित अपराध और नशीली दवाओं की तस्करी को बढावा दे रहे हैं। भारत को अपनी सैनाओं को तकनीकी तौर पर आधुनिकीकरण से लैस करके चीन और पाक पर काबू पाना होगा।

2.7 आर्थिक विकासः- स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय से ही आर्थिक विकास का मुद्दा भारत के लिए बेहद अहम् रहा हैं। भारत एक बड़ा बाजार है। विश्व का सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश होने के साथ-साथ विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र भी हैं। भारत में उदारीकरण की नीतियों को लागू करने के बाद से देश के आर्थिक विकास में तैजी से सुधार हुआ हैं।

भारत के आर्थिक विकास की दृष्टि से ऊर्जा एक महत्त्वपूर्ण कारक हैं। विश्व में तेल की कीमतें बढ़ने पर भारत की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था का मुकाम हासिल कर चुका है। लम्बे समय तक भारत ऊर्जा के लिए पश्चिम एशिया के अरब राष्ट्रों पर निर्भर रहा हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद से भारत सबसे ज्यादा कच्चा तेल रूस से खरीद रहा हैं। आजादी के 100 वर्ष (वर्ष 2047) पूर्ण होने पर विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने की दृष्टि से ऊर्जा की निरन्तर आपूर्ति, नये वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों को तलाशना और आर्थिक विकास की दर को बरकरार रखना होगा।

3. भारत की उभरती वैश्विक शक्ति बनाने के लिए सबल पक्षः-

- भारत विश्व की उभरती हुई महान् शक्ति बनने की दिशा मे अग्रसर हैं। भारत बेहतर नीतियां के

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

साथ तेजी से आगे बढ़ रहा हैं। चीन प्लस वन नीति के अनुसार बड़ी कम्पनियां भारत में निवेश को लेकर बड़ा गन्तव्य देख रही हैं। पश्चिम के राष्ट्रों के लिए चीन को रोकने में भारत का साथ महत्त्वपूर्ण होगा।

- भारत विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में निरन्तर अग्रसर है। रिजर्व बैंक के पास मार्च, 2023 के अन्त में विदेशी मुद्रा कोष 578.499 अरब डॉलर रहा।7
- भारत का विदेशी विनिमय भण्डार कोड 27 अक्टूबर, 2023 को 586.5 अरब अमेरिकी डॉलर का रहा है।
- वित्तीय वर्ष 2022-23 में देश का रक्षा निर्यात 15920 करोड़ रूपये का रहा हैं। आत्म निर्भर भारत अभियान के तहत रक्षा निर्यात में तेजी से वृद्धि हुई हैं।
- प्रत्यक्ष लाभ हस्तातंरण (डी.बी.टी.) के लिए आधार जैसे प्रौद्योगिकियों ने सब्सिडी के सन्दर्भ में रिसाव और भ्रष्टचार को कम किया है।
- भारत वर्तमान में जी-20 और शंघाई सहयोग संगठन के देशों को एक साथ साध पाने में सफल रहा है।
- वर्तमान में आंकड़ो के अनुसार विश्व-भर में फेले 10 लाख से अधिक प्रवासी भारतीय है। विश्व भ्रमण रिपोर्ट (2022) के अनुसार भारत अपने प्रवास से प्राप्त प्रेषण राशि मे विश्व मे शीर्ष पर हैं।
- चीन के आर्थिक और सैनिक उभार से अमेरिका और यूरोप के लिए हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में सामरिक और रणनीतिक चुनौती बढ़ी है, जिससे परिस्थितियां भारत के अनुकूल हुई है। पश्चिमी राष्ट्रों का भारत के साथ निरन्तर सहयोग मजबूत हुआ हैं। भारत में तेजी से डिजिटल बुनियादी ढ़ांचे का निर्माण हुआ हैं, जिससे तेजी से डिजिटलीकरण बढ़ा हैं।
- वर्तमान में भारत में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया। इसकी शुरूवात मार्च 2021 में की गयी थी और इसका समापन अक्टूबर 2023 को किया गया। भारत विश्व की पांचवी बड़ी

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

अर्थव्यवस्था, जी-20 और शंघाई सहयोग संगठन की शिखर बैठकों की अध्यक्षता, मेड-इन-इंडिया 5 जी की शुरूवात और कनैक्टीविटी में सुधार को बड़ा कदम माना जा सकता है।[8]

4 भारत के उभरती हुई महाशक्ति के मार्ग में चुनौतियाँ - विदेश नीति के निर्माण का आधार शुद्ध राष्ट्रीय हित ही होता है। वैश्विक भू-राजनीतिक और भू-सामरिक परिस्थतियों के मद्देनजर राष्ट्रीय हित के दृष्टिकोण से बदलाव की संभावनाएं मौजूद रहती हैं।

4.1 संतुलित नीति की अनिवार्यताः- भारत को किसी एक महाशक्ति के प्रति झुकाव की नीति को लेकर बचना होगा। भारत को किसी एक महाशक्ति पर अपनी निर्भरता से बचना चाहिए। भारत को अपने राष्ट्रीय हित के लिए संतुलित नीति अपनानी चाहिए।

4.2 पड़ोसी प्रथम नीतिः-भारत के पड़ोसी राष्ट्र अस्थिरता के दौर से गुजर रहे हैं। पिछले दो दशकों में चीन की उपस्थिति भारत के पड़ोसी देशों मे तेजी से बढ़ी हैं। चीन ने नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार, बांग्लादेश इत्यादि में सड़को, बंदरगाहों और हवाई अड्डों के निर्माण में बड़ी मात्रा में निवेश करके भारत के महाशक्ति के रूप में उभरने में चुनौती खड़ी कर दी हैं।

4.3 मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो को मजबूती देनाः- भारत के सम्मुख परम्परागत मित्रों (रूस) के साथ सम्बन्धों को घनिष्ठ बनाये रखते हुए नये मित्रों के साथ (अमेरिका) सम्बन्धों को नई दिशा में आगे ले जाना चुनौती हैं। विश्व की खेम्में बन्दी ने चुनौती को बढ़ा दिया हैं। दोनों महाशक्तियां भारत को अपने पक्ष में करने के लिए निरन्तर प्रयास कर रही हैं। रूस और चीन के साथ पश्चिमी राष्ट्रों का कोविड-19 और रूस-यूक्रेन युद्ध (2022) के बाद से टकराव बढ़ा है। भारत के प्रति वैश्विक समर्थन बढ़ा है। वैश्विक टकराव बढ़ने से भारत की राहें कठिन होगी।

4.4 रूस-चीन के बीच बढ़ती निकटता से उत्पन्न चुनौतीः- रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद से चीन और रूस के सम्बन्ध प्रगाढ़ हुए हैं। अमेरिका के रूस और चीन के साथ सम्बन्धो में तल्खी भी इसके

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

पीछे बड़ा कारण हैं। डोकलाम विवाद (2017) और गलवान घाटी की सैनिक झड़प (2020) के बाद भारत और चीन सम्बन्धो में कटुता साफ देखी जा सकती हैं। भारत अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर तटस्थ नहीं हैं। भारत शान्ति का पक्षधर है युद्ध का नहीं। भारत किसी मतभेद और विवाद का बातचीत, कूटनीति के जरिये समाधान निकाले जाने के पक्ष में हैं। लेकिन अपनी सम्प्रभुता और सम्मान की रक्षा के लिए भी पूरी तरह से समर्पित है।[9]

4.5 अर्थव्यवस्था में आवश्यक सुधारों को प्राथमिकता की आवश्यकताः- भारत को विश्व के नये आपूर्तिकर्ता केन्द्र बनने, अधिक विदेशी निवेश और अधिक निर्यात की सम्भावनाओं के लिए मजबूती से कदम लगातार बढ़ाने होगें। विश्व के प्रमुख देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों को तेजी से अमल में लाना होगा। भारत को वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभरने के लिए निरन्तर आर्थिक विकास की दर को बरकरार रखना होगा। भारत में समय पर परियोजनाओं का पूरा न होना चिन्ता का विषय हैं। भूमि अधिग्रहन, वन और पर्यावरण मंजूरी को लेकर भी देरी भी चिन्ता का विषय हैं।[10]

4.6 आर्थिक विकास के लाभ की सभी तक पहुंच नहीं- भारत में आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुंचना जरूरी हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में प्रगति अवश्य हुई है। गरीबी अभी भी एक बड़ी समस्या बनी हुई हैं। मुफ्त अनाज वितरण का जारी रहना इस बात का संकेत है कि देश में गरीबी, भुखमरी के कारण आर्थिक क्षेत्र में विकास के सन्दर्भ में लोगों की निर्भरता सरकार की सहायता पर बनी हुई है। भारत के युवा वर्ग के लिए तकनीकी कौशल में दक्ष होना समय की मांग हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य पर भारत में खर्च विश्व स्तर पर खर्च की तुलना बहुत कम हैं।

4.7 हथियारों को लेकर विदेशों पर निर्भरताः- भारत की हथियारों के आयात को लेकर विदेशों पर निर्भरता रही हैं। आजादी के बाद से भारत लम्बे समय तक हथियारों की आपूर्ति हेतु

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

सोवियत संघ पर निर्भर रहा। वर्तमान में भारत की हथियारों के आयात को लेकर रूस पर निर्भरता बनी हुई है। मेक-इन-इण्डिया कार्यक्रम की सफलता से देश में हथियारों का निर्माण बड़े पैमाने पर हो रहा हैं। भारत अपनी रक्षा आवश्यकताओं के मद्देनजर अमेरिका, रूस, फ्रांस और इजरायल से आधुनिक हथियारों का आयात कर रहा है।

5 भारत के वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभरने के संदर्भ सुझावः-

- भारत को महान शक्ति बनने के लिए समुद्री शक्ति का तेजी से आधुनिकीकरण करना होगा। भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार समुद्री मार्ग से होता हैं। हाल ही में हूती विद्रोहियों द्वारा कई देशों के जहाजों को निशाना बनाया जाना इसका उदाहरण है। भारत के लिए वैश्विक महाशक्ति बनने के लिए नौ सेना की ताकत को कई गुणा बढ़ाना आवश्यक है। शक्तिशाली सैन्य शक्ति को महाशक्ति बनने की पहली शर्त के तौर पर देखा जा सकता है।
- किसी भी देश के लिए वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभरने के लिए विशाल एवं मजबूत अर्थव्यवस्था का होना जरूरी माना जाता है। वर्तमान में भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। भारत को आर्थिक विकास की दर में स्थायित्व और निरन्तरता को बनाये रखना होगा।
- भारत को किसी भी महाशक्ति का पिछलग्गू बनने से दूर रहना होगा। भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति में सन्तुलन राष्ट्रीय हितों के अनुरूप हो। भारत निरन्तर खेम्में बंदी का विरोध करता रहा है। भारत दुनिया में शान्ति का प्रबल समर्थक रहा है।
- वैश्विक स्तर पर खाद्यान संकट के बीच भारत में रिकॉर्ड खाद्यान का उत्पादन से भारत निर्यात करके अपने लिए आर्थिक एवं मानवीय साख बढ़ाने मे सफल हुआ है। भारत को वैश्विक महाशक्ति बनने के लिए अपनी बड़ी आबादी हेतु खाद्यान में आत्मनिर्भरता को बनाये रखना होगा।

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

- भारत को तेजी से घरेलू स्तर पर अपनी आन्तरिक चुनौतियों जैसे नक्सलवाद, आतंकवाद सम्प्रदायवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद इत्यादि पर सम्पूर्ण रूप से काबू पाना होगा। चीन और पाकिस्तान निरन्तर भारत विरोधी ताकतों को बढ़ावा दे रहे हैं।
- भारत को अपने आयात में कमी और निर्यात में बढ़ोतरी करनी होगी। भारत में जी.एस.टी संग्रह और विदेशी निवेश में निरन्तर बढ़ोतरी शुभ संकेत है। भारत में ऑनलाइन लेन-देन बढ़ने से अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता बढ़ी है, और भ्रष्टाचार पर शिकंजा कंसा है।
- भारत को हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र में अपने सामरिक एवं रणनतिक हितों को साधने के लिए समान हितों वाले दशें से साझेदारी को मजबूत करना होगा। अमेरिका पर ज्यादा निर्भरता भी भारत के हित में नहीं है।
- भारत को वर्तमान वैश्वीकरण की प्रक्रिया में ज्यादा सक्रिय होकर प्रभावी भूमिका के लिए प्रयास करना चाहिए।
- पश्चिम एशिया में भारत की नीति संतुलित रही हैं। भारत इजरायल और अरब राष्ट्रों को एक साथ साधने की नीति पर चल रहा है जो राष्ट्रीय हितों की दृष्टि से उपयुक्त कहीं जा सकती है।
- भारत बहु-धुरवीय विश्व में परस्पर विरोधी राष्ट्रों के बीच सेतुबन्ध की भूमिका में है। जी-20 और शंघाई सहयोग संगठन की सदस्यता इसका प्रमाण है।
- चीन के आर्थिक एवं सैनिक उभार ने भारत और अमेरिका को साथ ला खड़ा किया हैं। दूसरी और अमेरिका से विरोध के चलते चीन-रूस की घनिष्ठता बढ़ी है।
- अन्तरिक्ष के क्षेत्र मे उपलब्धियां भारत के लिए गर्व की बात हैं। इसरो की हालिया चन्द्रयान-3 और आदित्य एल-1 की उपलब्धियां भारत की अन्तरिक्ष के क्षेत्र में महाशक्ति का प्रमाण है।
- भारत के पास भौतिक और मानव पूंजी की कोई कमी नही है। तकनीकी के माध्यम से भारत अपने आर्थिक एवं सामाजिक बदलाव को सम्भव बना सकता है।

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत वैश्विक महाशक्ति बनने की क्षमता रखता है। 21 वीं सदी भारत और चीन की है। किसी राष्ट्र के लिए शक्ति के रूप में उभरने के लिए आर्थिक क्षमता, राजनीतिक, जनसंख्यात्मक पहलू, सैन्य क्षमता और सांस्कृतिक विरासत मुख्य पहलू हो सकते है। भारत इन सभी पहलुओं की दृष्टि से वैश्विक महाशक्ति के रूप में खरा उतरता है। हांलाकि भारत के महाशक्ति बनने के मार्ग में कई चुनौतियां विद्यमान है। आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्षों) के बाद वर्तमान में भारत कई समस्याओं से उभर चुका है। भारत की सैन्य, आर्थिक, शिक्षा, स्वास्थ्य तकनीकी और अन्तरिक्ष के क्षेत्र में उपलिब्धयां गौरवान्वित करने वाली हैं। वैश्विक महाशक्ति का सफर तय करना जारी है। भारत ने 'विकसित भारत' का लक्ष्य वर्ष 2047 तक निर्धारित किया है।

सन्दर्भ सूचीः-

1. डॉ. एस.सी. सिंहल, भारत की विदेश नीति, सप्तम संस्करण, 2022, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ, 448
2. फड़िया डॉ. बी.एल, अन्तराष्ट्रीय राजनीति, 16 वां संशोधित संस्करण, 2014, साहित्य भवन पब्लिकेशंस आगरा, पृष्ठ, 108
3. उपर्युक्त, वही, पृष्ठ, 114
4. यादव आर.एस., भारत की विदेश नीति, पियर्सन इंडिया एज्युकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा, उत्तरप्रदेश, भारत, पृष्ठ 28
5. क्रॉनिकल, क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि. नोएडा, जून, 2023 पृष्ठ, 09
6. मिश्रा राजेश, भारतीय विदेश नीतिः भूमंडलीकरण के दौर में, चौथा संस्करण, 2022, ओरियंट ब्लैकस्वान

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 02, 320-335
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7707

प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत, पृष्ठ, 17

7. प्रतियोगिता दर्पण, जून, 2023, पृष्ठ, 22
8. प्रतियोगिता दर्पण, जनवरी, 2024, पृष्ठ, 12
9. द्विपक्षीय सम्बन्धां के लिए सीमा क्षेत्रों में शान्ति व सौहार्द जरूरी, विवादों का हल कूटनीति से हो, हरिभूमि, दिनांक 21 जून, 2023, पृष्ठ, 10
10. चीन सहित दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में इस दशक में सबसे तेज बढ़ेगा भारत, नोमुरा रिपोर्ट, अमर उजाला, 06 जून, 2023, पृष्ठ, 07

Received on Feb 10, 2024

Accepted on March 15, 2024

Published on April 05, 2024

भारत विश्व की उभरती हुई महाशक्ति ©

2024 by Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal is licensed under CC BY-NC-ND 4.0